कुलगीत

विश्वेश नगरी के निकट, सेवापुरी यह ग्राम है।
गुरुकुल हमारा है यही, विद्या का पावन धाम है।।
विश्वेश नगरी के निकट.....

इस पुण्यभूमि में करें, हम सरस्वती की साधना।
अच्छे बनें, सच्चे बनें, मन में यही है कामना।।
सबला हैं हम, अबला नहीं, भय का यहाँ क्या काम है।।
विश्वेश नगरी के निकट.....

हम चिर ऋणी होंगे सदा, इस भूमि इस परिवेश के।
कर लक्ष्य हासिल नित नये, कुछ काम आये देश के।
हम कर दिखायेंगे वही, संस्था का जिसमें नाम है।।
विश्वेश नगरी के निकट.....

विश्वेश नगरी के निकट, सेवापुरी यह ग्राम है।
गुरुकुल हमारा है यही, विद्या का पावन धाम है।।
विश्वेश नगरी के निकट.....